सीकर उपखण्ड एवं शेखावाटी के भित्ति–चित्रों का राजस्थान के अन्य स्थानीय भित्ति चित्रों से तुलनात्मक अध्ययन

रामसिंह सरावगं

सहायक आचार्य, श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय, सीकरए एवं शोधार्थी, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

rams250605@gmail.com

सारांशः राजस्थानी चित्रकला अपनी प्राचीनता के लिए जाना जाती है। जब राजस्थान की चित्रकला अपने प्रारंभिक दौर से गुजर रही थी तब अजन्ता परंम्परा भारत की चित्रकारी में एक नवजीवन का संचार कर रही थी। अजन्ता परम्परा के गुजराती चित्रकार सर्वप्रथम मेवाड़ तथा मारवाड़ में पहुँचे। इस समन्वय से चित्रकारी की मौलिक विधि में एक नवीनता का संचार हुआ जिसे मंडोर द्वार के गोवर्धन–धारण तथा बाडौली व नागदा गाँव की मूर्तिकला में सहज ही देखा जा सकता है। राजस्थान की समन्वित शैली के तत्वावधान में अनेक जैन–ग्रंथ चित्रित किये गये। सीकर उपखण्ड एवं शेखावाटी क्षेत्र के भित्ति–चित्र विशेष रूप से हवेलियों, मंदिरों, छतरियों और अन्य स्थापत्य स्मारकों से जुड़े हुए हैं। नवलगढ़, लक्ष्मणगढ़, मुकुंदगढ़, मंडावा आदि में स्मारक उदाहरण मिलते हैं। उन्नीसवीं और बीसवीं सदी की शुरुआत में व्यावसायिक समृद्धि के कारण हवेलियों के बाहरी और आंतरिक उद्योगों को बड़े पैमाने पर चित्रित किया गया था। इन रचनाओं में रामायण–महाभारत, कृष्णलीला, देवी–देवता, लोकनायक, पशु–पक्षी, राजदरबार, युद्ध, शिकार, विवाह, घरेलू जीवन और सांस्कृतिक संबंधों के साथ–साथ औपनिवेशिक काल की रेलगाड़ी, मोटरगाड़ी, साइकिल और सैनिक जैसे आधुनिक विषय भी दिए गए हैं। इस प्रकार शेखावाटी चित्रकला में परम्परा और आधुनिकता का विशिष्ट समन्वय दिखाई देता है।

मुख्य शब्दः स्थानीय चित्रकला, राजस्थानी चित्रकला, भित्ति चित्रण परम्परा।

प्रस्तावना

भित्ति–चित्रण की परम्परा आधुनिक न होकर प्राचीन है, उतनी ही प्राचीन जितना कि मानव स्वयं। यद्यपि भित्ति चित्रों की परम्परा सम्पूर्ण देशव्यापी रही है किन्तु राजस्थान इस दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध रहा है। यहाँ के शासकों ने जहाँ धार्मिक प्रवृत्ति के अनुसार अनेक देवालयों का निर्माण कराया वहीं बड़े–बड़े राजप्रासाद और दुर्ग बनवाये तथा उनके साथ साज–सज्जा के लिए भित्ति चित्रों को प्रमुखता प्रदान करके उनके अनेक आयाम प्रस्तुत किये। राजस्थान में हमें प्राचीनकाल से ही भित्ति चित्र मिलते हैं किन्तु मध्ययुग

के अन्तर्गत तो राजस्थान में कदाचित् कोई भी राजप्रासाद, देवालय तथा हवेली ऐसी नहीं मिलती जिसकी भित्तियाँ आकर्षक तथा कलात्मक भित्ति चित्रों से सुसज्जित न हों।[1]

शोध पद्धति

सीकर उपखण्ड एवं शेखावाटी के भित्ति–चित्रों की राजस्थान के अन्य स्थानीय भित्ति चित्रों से तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए एक ऐसी शोध पद्धति का चयन किया गया है, जो इस क्षेत्र के ऐतिहासिक, कला एवं स्थापत्य और स्थानीय भित्ति चित्रों के विविध पहलुओं का सूक्ष्म और वैज्ञानिक विश्लेषण कर सके।

- प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत सीकर क्षेत्र के प्रमुख धार्मिक स्थलों, हवेलियों, उसकी चित्रों व स्थापत्य का अवलोकन किया गया तथा भित्ति–चित्रों के कलाकार, इतिहासकार और अन्य विद्वानों से संवाद किया गया है।

- द्वितीयक स्रोत के रूप में प्रकाशित एवं अप्रकाशित पुस्तकें, शोध प्रबंध, शोध पत्र, सरकारी प्रतिवेदन, पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग के अभिलेख, पत्र–पत्रिकाएं तथा अन्य प्रामाणिक तथ्यों का अध्ययन किया गया है।

साहित्य समीक्षा

आर्य, एच.एस., शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर, 2020 – पुस्तक में शेखावाटी की चित्रकला की सामान्य विशेषताएं, भित्ति चित्रों के प्रमुख विषय, निर्माण की विधियां आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक में शेखावाटी के विभिन्न मंदिरों, छतरियों, बावड़ियों, हवेलियों आदि के स्थापत्य व इतिहास का वर्णन भी मिलता है जो इस शोध कार्य में हमारे लिए उपयोगी होगा।

मुरारीलाल शर्मा, राजस्थान की शैल चित्रकला, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं मोतिलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2018 – प्रस्तुत ग्रंथ में सामग्री का अनुक्रम, योजना और प्रस्तुतीकरण किसी पूर्व निर्धारित आदर्श पर आधारित नहीं है बल्कि यथार्थ वस्तुस्थिति, विषय–संगति, चित्रित जीवन एवं चित्रण की विविधता तथा रचना विधान आदि को दृष्टि में रखकर विज्ञ तथा सामान्य दोनों प्रकार के अध्येताओं के लिए मौलिक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

श्रीवास्तव, प्रदीप, शेखावाटी के भित्ति चित्रों का सांस्कृतिक एवं कलात्मक इतिहास, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2006– पुस्तक भी उल्लेखनीय है। इस पुस्तक में कुल 8 अध्याय है। इसमें शेखावाटी के भित्ति चित्रण परम्परा के प्रेरक तत्व, चित्रों की विषयवस्तु का वर्गीकरण, चित्रों के निर्माण की विधियां आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है।

मोहनलाल गुप्ता, फ्रेस्को एण्ड वॉल पेंटिंग ऑफ राजस्थान, जयपुर, 1965 – पुस्तक में राजस्थान के अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ शेखावाटी क्षेत्र के भित्ति चित्रों की निर्माण विधि उसके रंग संयोजन एवं चित्रों के प्रमुख विषय आदि पर प्रमुखता से प्रकाश डाला गया है।

सीकर उपखण्ड क्षेत्र के भित्ति चित्रों में राजस्थान की राजपूत शैली और मुगल स्थापत्य कला का अद्भुत मिश्रण है, जो अपनी हवेलियों पर सूक्ष्म भित्ति चित्र, झरोखों और भव्य किलो के लिए प्रसिद्ध हैं। अन्य राजस्थानी शैली की तुलना में, यहाँ की हवेलियाँ व्यावसायिक समृद्धि और कौशलता को अधिक प्रदर्शन करती हैं। सीकर उपखण्ड क्षेत्र के भित्ति चित्रों का राजस्थान एवं शेखावाटी के भित्ति चित्रों से तुलनात्मक अध्ययन निम्न प्रकार से किया जा रहा है–

बैराठ – जयपुर एवं दिल्ली मार्ग पर जयपुर से 52 किलोमीटर की दूरी पर बैराठ नामक स्थान है, जिसको विराट नगरी के नाम से भी जाना जाता है। इसके मुगल बाग में उत्तर 16वीं शताब्दी के चित्र फ्रेस्को व्यूनो 'आला गीला' पद्धति द्वारा निर्मित हुए हैं तथा इनकी शैली पर मुगल काल का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। ये मुगल लघु–चित्रों के वृहद रूपान्तरित रूप ही हैं। कपड़ों की फहरान, फूल पत्तियों के अलंकरण, संयोजनात्मक अभिव्यक्ति की समरूपता की दृष्टि से पर्शियन तथा मुगल शैली का रूपान्तरण मात्र हैं। यहाँ पर अंकित चित्रों की विषय–वस्तु प्रायः शिकार, सवारी, दरबार तथा कृष्ण लीला के विविध दृश्य रहे हैं। एक चित्र में एक स्त्री टोप पहने चित्रित की गई है। इससे प्रकट होता है कि दरबारों में पश्चिमी वेशभूषा का प्रभाव उस समय आ रहा था। एक अन्य चित्र में भी एक स्त्री टोप पहने, तोता लिए दिखाई गई है। यहाँ पर चित्रांकित राधा–कृष्ण और गोपियों के चित्र में कृष्ण को चक्करदार जामा तथा जहाँगीर काल के समान पगड़ी पहने दर्शाया गया है। शेर द्वारा हिरण का शिकार, मल्लयुद्ध व पट्टेबाजी करते हुए फिरंगी आदि के भी चित्र यहाँ पर मिले हैं। इन चित्रों में गर्दनें छोटी हैं, जामे पट्टेदार तथा जूतियों की नोंक पर फूल बने हुए हैं। कपड़ों की किनारियों के अलंकरण के लिए रंगों पर ही किसी नुकीली चीज से खरोंच कर सजावट की गई है।[2]

आमेर तथा जयपुर के भित्ति–चित्र : मिर्जा राजा जयसिंह ने महाराजा मानसिंह के द्वारा प्रचलित कराई गई भित्ति चित्रण परम्परा को 17वीं शताब्दी के अन्तिम चरण तक आमेर में पल्लवित पुष्पित कराया। आमेर में गणेश पोल के मुख्य द्वार पर गणेश जी का एक सुन्दर चित्र बनवाया, दोनों ओर पुष्पित पौधे बनाये गये हैं, जो निःसन्देह राजा मानसिंह के काल की भित्ति चित्रकला के श्रेष्ठ व सुविकसित रूप हैं।[3] इसके अतिरिक्त गणेश पोल की बाहरी दीवार पर भी इसका एक समकालीन चित्र है, जिसमें गणेश जी को ऋद्धि–सिद्धि सहित दर्शाया गया है। मिर्जा राजा जयसिंह ने भित्ति–सज्जा की सभी शाखाओं को अपने काल में प्रोत्साहित किया और आमेर का जय मन्दिर, जिसको शीश महल भी कहा जाता है, बनवाया तथा उसको तरह–तरह के रंगीन कांच के द्वारा, उभरे हुए अलंकृत आलेखनों से तथा तरह–तरह के कीमती पत्थरों से अलंकृत कराया। यह उसके सुविकसित कला–प्रेम का धोतक है।[4]

आमेर के किले में नवीन खोजों के आधार पर कुछ चित्र चूने के प्लास्तर के नीचे से खुरचकर व धोकर निकाले गये है। ये आकृतियाँ सम्भवतः राजस्थानी कलाकारों के प्राचीन मेवाड़ शैली का आभास देती हैं। फूल, पशु, पक्षी एवं फूलों का चित्रण राजा मानसिंह तोमर के ग्वालियर के किले की साज–सज्जा से मिलता हैं। स्मरणीय है कि राजा मानसिंह राजस्थान तथा अन्य प्रदेशों में जहाँ पर युद्धों के लिये जाया करते थे, वहाँ के प्रसिद्ध कलाकारों तथा शिल्पियों को अपने साथ ले आते थे, जिनकी कला एवं हस्तशिल्पों का प्रभाव उसके शासन काल की भित्ति–चित्र कृतियों एवं भवनों में आ गया है। राजा भारमल की छतरी में मुगल दरबार के कलाकारों को चित्रण के लिये लाया गया था, जिनके द्वारा इस छतरी में आलंकारिक बॉर्डर चित्रों की शुरुआत हुई है। मिर्जा राजा जयसिंह के काल में तो मुगल शैली का प्रभाव राजस्थानी भित्ति चित्रकला पर काफी हद तक दृष्टिगोचर होने लगा था।[5]

नागौर के भित्ति–चित्र

नागौर के भित्ति चित्रों के सम्बन्ध में कला समालोचकों के बीच एक समस्या है कि नागौर की भित्ति–चित्रकला जोधपुर से प्रभावित है अथवा बीकानेर से। किसी का कथन है कि यह अजमेर शैली का एक प्रभावोत्पादक उपादान है। प्रसिद्ध जर्मन कला मर्मज्ञ डॉ. हरमन गोयत्ज ने नागौर के भित्ति चित्रों को राजस्थानी चित्रकला के अन्तर्गत नागौर स्कूल के नाम से अभिहित किया है। स्थूल दृष्टि से उनका यह नामकरण सहसा ही मन में एक आश्वासन सा पैदा करता है कि अवश्य ही नागौर के भित्ति चित्र समस्त राजस्थान के भित्ति चित्रों से एकदम भिन्न हैं और इस नाते इन्हें नागौर शैली द्वारा सम्पादित कहा जाना चाहिये। इस पर विचार करते हुए कुँवर संग्रामसिंह जी ने इन्हें आमेर स्कूल के प्रति अतिशय पक्षपातपूर्ण नीति का आलम्बन लेते हुए नागौर के इन लुभावने चित्रों को अजमेर स्कूल के अन्तर्गत खींचने का अतिरंजित प्रयास किया है। मोहन लाल गुप्ता ने इन चित्रों को बीकानेर स्कूल की एक शाखा के रूप में प्रतिपादित करने का प्रयास किया है। डॉ. आर. ए. अग्रवाल ने अपनी प्रकाशित शोध ग्रन्थावली को चित्रों से भी सुसज्जित कराया। यहाँ पर एक चित्र लगभग 30 फुट लम्बा तथा 6 फुट चौड़ा बना हुआ है। भीमकाय महाराजा माधोसिंह स्वयं स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान हैं, उनके चारों ओर अन्तःपुर की रानियाँ, परदायतें, खड्गधारिणी, चंवरधारिणी और ताम्बूल सेविकाएँ खड़ी हैं। गायिकाओं का एक समूह भी आलाप ले रहा है। इस राजप्रासाद में एक भव्य चित्र कबूतरों का भी है। महल के एक कक्ष की पूरी छत को आकाशीय आभा से रंगा गया है, जिसमें विभिन्न मुद्राओं में कबूतर उड़ रहे हैं। यहाँ पर श्री कृष्ण और राधा को बड़े ही कमनीय रूप में चित्रित किया गया है।[6]

मेवाड़

16वीं शताब्दी से पूर्व मेवाड़ की नगरीय सभ्यता का केन्द्र, एक प्रकार से चित्तौड़ था। यहाँ पर महाराणा कुम्भा के काल के कुछ फूल–पत्तियों के आलेखन मात्र ही विकृत अवस्था में अवशिष्ट हैं, जिनका निर्माण काल 15वीं शताब्दी माना जाता है,[7] जो इस क्षेत्र के सर्व प्राचीन भित्ति चित्र अवशेष हैं। हो सकता है

यहाँ पर और भी अधिक आकृति मूलक भित्ति–चित्र रहे हों, जिन्हें युद्ध की विभीषिका ने नष्ट कर दिया हो। उदयपुर–मेवाड़ में जगनिवास महल (जिसे जल महल भी कहते हैं) उदयपुर के किले के अतिरिक्त बारठ जी की हवेली, दौलतराम जी तिवाड़ी की हवेली, बापना साहब की हवेली तथा गणेशीलाल जी भट्ट का रंग भवन आदि भित्ति चित्र के प्रमुख केन्द्र हैं।

जगनिवास महल में महाराणा भीमसिंह को दो विदेशी सुन्दरियों के साथ चित्रित किया गया है, जिन्हें किसी विदेशी ने उपहार स्वरूप महाराणा को दिया था। उदयपुर के मर्दाना महल के 'कृष्ण विलास' में शिकार, सवारी, गणगौर तथा बड़े आकार के हाथियों को चित्रित किया गया है। यहाँ पर आकृतियों के चेहरे प्रायः एक चश्म हैं। स्त्रियों की वेशभूषा आमतौर पर लहँगा, चोली तथा ओढ़नी है, आँखें दीर्घ तथा काजलयुक्त हैं, चेहरों में उजाला तथा साया दर्शाया गया है। एक चित्र में राजा के सम्मुख नृत्यरत नर्तकियों की वेशभूषा में झीना पेशवाज तथा चूड़ीदार पायजामा है। नारी आकृतियाँ प्रायः छोटे आकार की हैं। यहाँ पर पश्चिमी परिधान को भी देखा जा सकता है। फिलिपरोसन ने[8] भी उदयपुर के महल में 18वीं शताब्दी के एक स्त्री चित्र का विवरण दिया है, जिसमें पश्चिमी परिधान व उसके प्रभावों की पुष्टि होती है। इसी महल के 'भीम विलास' के भित्ति–चित्रों में मुगलकालीन परिधानों के अतिरिक्त राजस्थानी परिधानों (लहँगा, चोली व ओढ़नी) में साड़ी को भी पहनाये दर्शाया गया है। 'प्रियतम विलास' के अन्तर्गत लैला मजनूं की कथा का चित्रण, परियों तथा पश्चिमी नारियों का भी चित्रण है। यहाँ पर गणगौर उत्सव के चित्रों में स्त्रियों के मुख पर प्रसन्नता की मुस्कान दर्शाने का प्रयास कलाकार ने किया है, किन्तु आकृतियाँ कुछ स्थूलकाय व अल्प छोटी हैं।

उदयपुर में नगर सेठ की हवेली जो कि हाथियों की लड़ाई तथा विभिन्न क्रिया कलापों में संलग्न हाथी समूहों के चित्रण के लिए प्रख्यात है, के अन्तर्गत अंगड़ाई की मुद्रा में मानवाकार चित्र जिसमें कोटा शैली की झलक है, उल्लेखनीय रचना है।[9]

मारवाड़

जयपुर तथा मेवाड़ की भाँति जोधपुर (मारवाह) क्षेत्र में भी भित्ति चित्रों की महती परम्परा प्रचलित रही है। यहाँ के महान राठौर योद्धाओं ने इस कला के प्रति अपनी रुचि को बराबर बनाये रखा। जोधपुर के किले व नागौर के किले के विभिन्न भागों में देवालयों एवं नगर के राजप्रमुख व्यक्तियों व जन सामान्य की प्रायः सभी प्राचीन हवेलियों में भित्ति चित्रों का निर्माण हुआ है। सुविधा के लिए नागौर के भित्ति चित्रों को हम अलग से उल्लेखित करेंगे। सर्वप्रथम हम जोधपुर के किले के भित्ति–चित्रों को लेते हैं। इस किले के फूल महल को महाराजा अभय सिंह (1724–1749 ई.) ने बनवाया था, जिसे बाद में महाराजा तफतसिंह (1843–1863 ई.) तथा महाराजा जसवन्त सिंह द्वितीय (1863–1875 ई.) ने अपने–अपने समय में चित्रित कराया।[10] डॉ. आर. ए. अग्रवाल के अनुसार फूल महल के अन्तर्गत 36 रागिनियों का क्रमबद्ध चित्राकंन हुआ है जिन पर राग–रागिनियों का नाम भी अंकित मिलता है।[11]

कोटा–बूंदी

कोटा–बूंदी शैली के लघु–चित्र राजस्थानी शैली में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं तो यहाँ के कलात्मक भित्ति–चित्र भी किसी से कम नहीं है। बूंदी का सारा शहर विभिन्न विषयों के भित्ति चित्रों से भरा पड़ा है। यहाँ का राजप्रासाद तो मानो भित्ति चित्रों का खजाना है। भवानीसिंह जी की हवेली, सेठों की अट्टालिकाएँ तथा अन्यान्य रसिक जनों के प्राचीन भवनों में भी भित्ति–चित्रण प्रचुरता से हुआ है। बूंदी के किले के दल्लान में अनेक सुन्दर भित्ति चित्र हैं। यहाँ की नारी आकृतियों की मुख–मुद्रा बूंदी के 18वीं शताब्दी के लघु–चित्रों के समान ही है। इन चित्रों में स्त्री का परिवेश पेशवाज तथा चूड़ीदार पायजामा भी चित्रित हैं। स्त्रियों को चित्रों में कई स्थानों पर मोरछल लिये हुए दिखाया गया है।[12]

बीकानेर के भित्ति–चित्र

बीकानेर के शासकों से संरक्षित उस्तादों की कला का सम्बन्ध दिल्ली की दरवारी मुगल कला से अत्यधिक व घनिष्ठ था। किन्तु प्रारम्भिक बीकानेर की कला दिल्ली से प्रभावित होकर भी अपने निजत्व को धारण कर पाई है। फिर भी बारीकी और सफाई में मुगल कला का गुण इस कला–शैली में हमेशा बना रहा। यह बात भित्ति चित्रों में भी बराबर दृष्टिगोचर होती है। बीकानेर के भित्ति चित्रों में फ्रेस्को सेक्को तथा टैम्परा दोनों ही पद्धतियों पर बराबर अधिकार के साथ भित्ति चित्रण हुआ हैं। यहाँ के जूनागढ़ में तथा कुछ अन्य मन्दिरों में इनके बहुत ही उत्कृष्ट नमूने देखने को प्राप्त होते हैं। जूनागढ़ में बादल महल का चित्र–संयोजन राजस्थान ही नहीं, अपितु भारतीय भित्ति चित्र कला में एक अद्वितीय स्थान रखता है। दो कमरों में लगातार बादल और बिजलियाँ अंकित हैं। बादलों से बूँदें पड़ती दिखाई दे रही हैं, केवल एक स्थान पर खिड़की बनाकर वहाँ एक सुन्दर वीणा रखी दिखाई गई है। जब इन कमरों से बाहर आते हैं तो द्वार पर एक सारस का जोड़ा मिथुन–क्रीड़ा में संलग्न दर्शाया गया है, जो बादलों के प्रकृत उद्दीपन प्रभाव से प्रभावित जान पड़ता है। चित्रकार को इस विषय की मौलिक कल्पना उल्लेखनीय है। जूनागढ़ व बीकानेर में कृष्ण विषयक तथा नायक–नायिकाओं के चित्रों को भी अत्यन्त मनोरम ढंग से चित्रित किया गया है।[14]

अलवर के भित्ति–चित्र

जयपुर क्षेत्र के अलवर राज्य में भी विभिन्न भित्ति चित्रों का निर्माण हुआ है। अलवर के 'दरबार ए खास' हाल तथा शीश महल में फ्रेस्को सेक्को पद्धति के भित्ति चित्र बने हैं। चित्रों में राधा–कृष्ण के विभिन्न क्रियाविलास तथा कृष्ण के लीलाधारी रूपों को रूपायित किया गया है। 19वीं शताब्दी के मध्यकाल के ये भित्ति चित्र कला प्रेमी महाराजा विनयसिंह के शासन काल में निर्मित हुए। यहाँ के चित्रों में अपनी कुछ मौलिकताओं के अतिरिक्त जयपुर शैली का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। छत के अलंकरण तो अत्यधिक सुन्दर बन पाये हैं। अलवर में दीवान जी की हवेली के भित्ति चित्रों में भी अत्यधिक सूक्ष्मातिसूक्ष्म

भावाभिव्यक्ति की क्षमता है। यहाँ पर स्त्रियों की विविध मुग्धकारी मुद्राएँ तथा विभिन्न क्रियाविलासों को चित्रित किया गया है। स्त्रियों को खूब घेरदार लहँगा, ओढ़नी तथा चोली पहनाई है। अनेक सुन्दर आभूषणों से इन्हें सुसज्जित किया गया हैं। कमल के समान विशाल नेत्र, कमान के समान भृकुटि एवं सुन्दर नासिका इनका सौन्दर्य है। आकृतियों में एक विशेष प्रकार का लोच व अतीव आकर्षण है।[15]

किशनगढ़

किशनगढ़ के किले में मन्दिर के द्वार की ओर दो स्त्रियों के भित्ति चित्र हैं, जिनमें से एक स्त्री पूजा की थाली लिये हुए है तथा दूसरी सिर पर मटकी लिये हुए है। दोनों स्त्रियों का परिधान ठेठ राजस्थानी है, जो मोतियों व अन्य आभूषणों से सुसज्जित हैं। यहाँ पर अन्य पुतलियों के चित्र भी मांगलिक दृष्टि से अंकित किये हुए मिलते हैं। इनके आभूषण स्वर्ण के हैं, जिनमें माँगपट्टी, नाक में मोती, पैरों में पायल तथा कड़े एवं हथफूल धारण किये हुए हैं।[16]

चूरू के भित्ति–चित्र

यह राजस्थान में बीकानेर जिले से पास है। यहाँ पर 18वीं शती के मध्यकाल से लेकर 19वीं शती के उत्तरार्द्ध काल तक भित्ति चित्रों की महती परम्परा प्रचलित रही है। धार्मिक विश्वासों, प्रेम आख्यानों तथा दैनिक जीवन के विभिन्न क्रिया कलापों को यहाँ की विभिन्न प्राचीन हवेलियों में देखा जा सकता है। 18वीं शती के मध्य काल में निर्मित ऋद्धि–सिद्धि सहित भगवान गणेश का एक चित्र अत्यधिक सुन्दर है। इस चित्र में गणेश की गोद में पाँच स्त्रियाँ विशेष लाँगदार साड़ी पहने तथा सिर पर मुकुट धारण किये दिखाई गई हैं। यहाँ पर ही 19वीं शती का माँ ओर शिशु का एक चित्र है, जो मातृत्व के माँसल सौन्दर्य का सूचक है। इसका परिधान घाघरा, चोली एवं ओढ़नी है। आकृति यौवन से परिपूर्ण है। साँवले रंग की यह सुकुमार नारी सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति सी प्रतीत होती है। नीला लहँगा, लाल चुनरी तथा स्वर्ण के आभूषणों से सुशोभित की गयी है, जो एक उल्लेखनीय रचना है। चूरू का एक अन्य भित्ति चित्र जो कि 19वीं शती के तृतीय चरण का है, में गंगामाता तथा भक्त का चित्रण है। इसमें गंगा को सुन्दर नारी के रूप में चित्रित किया गया है, जो मकर पर आरूढ़ है। दीर्घ नेत्र, सिर पर मुकुट तथा दो हाथों में कलश धारण किये शान्त भाव के मुख वाली गंगामाता जी की यह भव्य कृति है। आनुपातिक दृष्टि से इसका मुख शरीर के अनुपात में अल्प बड़ा है। चुरू में ही 19वीं शती के मध्य काल का रनिवास के विलास का एक चित्र है, जिसमें नारी आकृति का चेहरा डेढ़ चश्म है। आँखों में बहंगेपन का आभास तथा हाथ की उँगलियों में अनगढ़ता के लक्षण परिलक्षित होते हैं, इसको चोली नहीं पहनायी गई है।

रतनगढ़ के भित्ति–चित्र

बीकानेर राज्य के प्रमुख नगरों में से रतनगढ़ एक था, जो चूरू जिले के पास है। यहाँ पर भी 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध काल में बड़ी ठकुरानी जी व छोटी ठकुरानी जी का चित्र मिला है। शीश पर मुकुट

तथा परिधान राजस्थानी है। यहाँ पर एक मरु यात्रा का चित्र है जिसमें ऊँटों पर सवार दो व्यक्तियों को यात्रा करते हुए दर्शाया गया है। चित्र में दोनों ठाकुर रास्ते की थकान मिटाने के लिये आपस में मिलकर बारी–बारी से हुक्के का पान कर रहे हैं। चित्र में ऊँटों की द्रुतगामी चाल को बड़ा मनोरम ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। इनके साथ–साथ हरिण भी दौड़ रहे हैं। सम्पूर्ण चित्र में बड़ी सफाई एवं बारीकी से कार्य किया गया है। रेखीय सौष्ठव एवं आकृतियों का समुचित संयोजन दर्शनीय है। चित्र के बाह्य अलंकरण 'बार्डर डिजाइन' में लयात्मक व आलंकारिक फूल–पत्तियों का अलंकरण है। इस चित्र पर बीकानेर की भित्ति चित्र–शैली का प्रभाव सुस्पष्ट है।

अजमेर के भित्ति–चित्र

अजमेर क्षेत्र के उपलब्ध भित्ति चित्रों में राजसी शैली की आभा है। चित्रों में अधिकांशतः ठाकुरों की जीवनचर्या को रूपायित किया गया है। ये चित्र शेखावाटी क्षेत्र के भित्ति चित्रों से भिन्न हैं, जिनमें ग्रामीण शैली का प्रभाव है। शेखावाटी के कलाकारों को विभिन्न सामन्तों एवं सम्पन्न लोगों का आश्रय मिला, इस कारण यहाँ के चित्रों में विषय की दृष्टि से विविधता है।[17]

शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान का एक छोटा–सा भाग है, जो जयपुर राज्य के अधीनस्थ एक ठिकाना था। कछवाह वंश के बाला जी के पौत्र राव शेखाजी के नाम पर इस क्षेत्र का नाम शेखावाटी पड़ा। यद्यपि शेखावाटी का इतिहास इतना पुराना नहीं है किन्तु इस क्षेत्र में लगभग 18वीं शताब्दी के मध्य काल में यहाँ भित्ति चित्रों का निर्माण होने लगा था। इसके बाद तो शेखावाटी क्षेत्र में भी राजस्थान के अन्य स्थानों की भाँति भित्ति चित्रण की महती परम्परा प्रचलित रही है। यहाँ पर प्रत्येक प्राचीन भवनों, दुर्गों, देवालयों, हवेलियों व छतरियों को विभिन्न विषयों के भित्ति चित्रों से सुसज्जित किया हुआ है। ये चित्र परिमाण में बहुत बड़े और रूपहले रंगों वाले हैं। इनकी निर्माण पद्धति विशेषतः आरायश (आलागीला) फ्रेस्को–सेक्को तथा टैम्परा रही है। यहाँ के चित्र भी धार्मिक, प्रेमाख्यानों, सामाजिक जीवन की विभिन्न झांकियों, रीति–कालीन श्रृंगारिक विषयों, नायक–नायिका भेद, राग–रागिनी आदि विषयों के अतिरिक्त अलंकृत आलेखनों से युक्त हैं।

शेखावाटी का इलाका राजस्थान ही नहीं, अपितु भारत भर में भित्ति चित्रों का खजाना हैं। यहाँ के छोटे से छोटे ग्राम की प्राचीन हवेली भी चित्रित मिलेगी। शेखावाटी के खेतड़ी दुर्ग स्थित राजमहल के चित्रों में, चिड़ावा में दुलीचन्द जी की हवेली को छोड़कर सभी स्थानों पर भित्ति चित्रकला के एक ऐसे रूप के दर्शन होते हैं जो सम्भ्रान्त एवं ग्राम्य आभा के मिले–जुले प्रतिरूप हैं। इन चित्रों में अपनी एक मौलिकता है, जिसमें अत्यन्त सादगी, रंगों का चटकीला एवं रूपहला स्वरूप तथा सुस्पष्ट रेखाओं का अंकन उल्लेखनीय है।

विषय–वस्तु की दृष्टि से राजस्थान के भित्ति चित्रों के अनुरूप ही शेखावाटी क्षेत्र के चित्रों में विविध विषयों को रूपायित किया गया है। यहाँ पर धार्मिक विषयों में वैष्णव धर्म के विभिन्न अवतारों– राम, कृष्ण, वराह तथा बुद्ध को अनेक स्थानों पर चित्रित किया गया है। दशावतार का उल्लेखनीय चित्र नवलगढ़ के गंगामाता के मन्दिर में क्रमबद्ध रूप में एक विशाल पैनल पर अंकित किया गया है। शेखावाटी क्षेत्र में जैन धर्म के चित्रों के अतिरिक्त मुस्लिम धर्म का एक प्रतीक चित्र सूरजगढ़ में खेतानों की हवेली में उपलब्ध हुआ है। धार्मिक विषयों के अतिरिक्त शेखावाटी क्षेत्र में लोकगाथाओं एवं विविध प्रेमाख्यानों में ढोलामारु, रूपमती बाज बहादुर, लैला–मजंनू आदि को भी राजस्थान के अन्य भित्ति चित्रों की भाँति चित्रित किया गया है। रीतिकालीन श्रृंगार भाव के नायक–नायिका भेद, राग–रागिनी आदि पर आधारित चित्रों का भी यहाँ पर प्रायः अंकन होता रहा है। राजदरबार, शाही जुलूस, तीज–त्योहार, गणगौर पर्व तथा स्त्रियों के विभिन्न क्रियाकलापों एवं व्यंग्य–विनोद और खेल–तमाशों को अत्यधिक रुचि के साथ अंकित किया गया है। यहाँ पर प्रायः सभी भवनों में विविध आलंकारिक आलेखनों, पशु–पक्षियों एवं रेलगाड़ियों को चित्रित किया गया है।[18]

विषय की दृष्टि से शेखावाटी क्षेत्र शेष राजस्थान भित्ति–चित्रों की अपेक्षा अधिक व्यापक एवं विविधता लिये हुए है। यहाँ पर रामायण के प्रसंगों पर विस्तार से चित्रों का निर्माण हुआ है, जिनमें राम–रावण युद्ध के अतिरिक्त सीता और रावण का युद्ध भी कलाकार की अपनी मौलिक परिकल्पना का परिचायक है। इस विषय का एक अद्भुत चित्र सूरजगढ़ के सत्यनारायण जी के मन्दिर में मिला है, जो लगभग 130 वर्ष पुराना है। महाभारत के चिर–परिचित घटनाक्रम में से पाण्डवों को द्यूतक्रीडा में पराजय एवं द्रौपदी का चीर हरण राजस्थान के भित्ति चित्रों में केवल शेखावाटी क्षेत्र के फतेहपुर व मण्डावा में मिले हैं। मल्लयुद्ध, नटों के विभिन्न करतब तथा बाजीगर का तमाशा आदि विषय भी मात्र शेखावाटी क्षेत्र में ही प्रचुरता के साथ अंकित किये गये हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि शेखावाटी क्षेत्र के विषय तुलनात्मक दृष्टि से राजस्थान के अन्य भित्ति चित्रों के समान ही नहीं वरन् अन्य अनेक मौलिक परिकल्पनाओं के साक्षी भी हैं। बिसाऊ का भी नारी जर तथा नारी विलक्षण कल्पना शक्ति के प्रतीकात्मक भित्तिचित्र हैं।

भित्ति चित्रण पद्धति की दृष्टि से शेखावाटी उपखण्ड के सीकर क्षेत्र के भित्तिचित्रों में अधिकांशतः चहु प्रचलित आरायश पद्धति आलागीला को राजस्थान के अन्य स्थानीय भित्ति–चित्रों की अपेक्षा अधिक महत्व दिया गया है, जबकि राजस्थान में बैराठ जयपुर तथा मेवाड़ को छोड़कर कोटा–बूंदी, मारवाड़ बीकानेर तथा अलवर आदि में आरायश पद्धति के चित्रों की अपेक्षा फ्रेस्को टैम्परा के चित्र प्रायः अधिक मिलते हैं। यों तो शेखावाटी क्षेत्र में भी फ्रेस्को सेक्को तथा टैम्परा पद्धति के चित्रों का निर्माण हुआ है किन्तु अधिकांश चित्रों में आरायश पद्धति को बहुधा अपनाया गया है। शैली की दृष्टि से भी शेखावाटी क्षेत्र के भित्ति–चित्र व राजस्थान के अन्य स्थानीय भित्ति–चित्रों में ग्रामीणत्व एवं सम्भ्रान्त कला का मिला–जुला प्रभाव झलकता है। ये चित्र लोक कला के सुविकसित एवं परिमार्जित अभिरूपों को समाहित करके एक नये रूप में प्रस्तुत

होते हैं। यद्यपि शेखावाटी के चित्रों को एक अलग स्कूल के रूप में प्रतिपादित नहीं किया जा सकता किन्तु इन चित्रों की कलात्मकता को नकारा भी नहीं जा सकता है।

राजस्थानी भित्ति चित्रकला की भाँति यहाँ की चित्रकला में भी राजस्थान के ही विभिन्न प्रदेशों की भित्ति–चित्रकला का प्रभाव सहज ही पहचाना जा सकता है। शेखावाटी के भित्ति–चित्रों में अपनी समसामयिक जयपुर, बैराठ एवं जोधपुर की कला का प्रभाव अनेक रूपों में दृष्टिगोचर होता है। खेतड़ी के चित्रों में जयपुर शैली के अतिरिक्त बूँदी शैली का भी प्रभाव स्पष्ट झलकता है। मुखाकृति की बनावट तथा उसमें छायांकन व कदली वृक्ष तथा पुष्पित लतिकाएँ बूँदी शैली की याद दिलाती हैं। चिड़ावा के दुलीचन्द जी की हवेली के कृष्ण लीला के चित्रों में जयपुर शैली का आकृति विधान, पूर्ण–योजना एवं रेखाओं के सौष्ठव का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।[19]

आकृति विधान में शेखावाटी की स्त्री तथा पुरुषाकृतियाँ जयपुर तथा जोधपुर के मिले–जुले प्रभाव को अभिव्यक्त करती हैं। यहाँ के चित्रों में दीर्घ नेत्र, ऊँचा माथा, कपोलों पर अलकावली बालों की लट, छरहरा शरीर किन्तु अधिक लम्बा नहीं अंकित हुआ है। यहाँ पर परिधान ठेठ राजस्थानी है, जिसमें अधिक घेर वाला घाघरा, बदन से सटी हुई चोली तथा अलंकृत ओढ़नी प्रचलित है। कभी–कभी धोती सेठानियों को पहनाये हुए भी चित्रित किया गया है। कुछ चित्रों में मुगलकालीन परिधान 'पेसवाज व चूड़ीदार पायजामा' स्त्रियों एवं पुरुषों को पहनाये हुए चित्रित किया गया है। शेष राजस्थान के भित्ति–चित्रों की तुलना में शेखावाटी के भित्ति चित्रों में राजस्थानी परिधान एवं अलंकरणों का अधिक प्रचलन रहा है जबकि बैराठ, जयपुर, अलवर, कोटा, बूँदी की कला में मुगल परिधानों के अतिरिक्त पश्चिमी प्रभाव भी अंकित हुआ है।

सीकर उपखण्ड एवं शेखावाटी क्षेत्र के भित्ति चित्रों में पशु–पक्षियों को पूरे मानवोचित आधार पर अंकित किया गया है, जैसा कि शेष राजस्थानी भित्ति चित्रों में भी पाया जाता है किन्तु राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में पशु–पक्षियों को स्वतन्त्र रूप से भी चित्रित करने की कलाकार की सहृदयभावना उल्लेखनीय रही है। श्री मोहनलाल गुप्ता के अनुसार मण्डावा के पूरे आकार के ऊँटों का भव्य चित्रण अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है जो इस बात का साक्षी है।

सीकर उपखण्ड एवं शेखावाटी के भित्ति चित्रों में चमकीले एवं रूपहले ओजस्वी रंगों का प्रयोग दर्शनीय है। ऐसा लगता है कि कलाकार ने इस प्रदेश की रंग शून्यता की कमी को चित्रों में इन्द्रधनुषीय रंगयोजना को अपनाकर पूरा किया है। लाल, नीले व हरे रंग को प्रमुखता के साथ प्रयुक्त किया गया है। फ्रेस्को–सेक्को तथा टैम्परा पद्धति के चित्रों में सिन्दूरी, गुलाबी, बैंगनी तथा पीले रंग को भी अपनाया गया है। शेष राजस्थान के भित्ति चित्रों में भी बहुधा इन्हीं रंगों को प्रयुक्त किया गया हैं किन्तु बीकानेर व जयपुर के भित्ति–चित्रों में रंग–योजना मुगल प्रभाव के कारण अत्यन्त कमनीयता लिये हुए है, जबकि शेखावाटी के भित्ति–चित्रों में सीमित रंगों का सपाट प्रभाव उल्लेखनीय है।

सीकर उपखण्ड एवं शेखावाटी के भित्ति चित्रों का संयोजन अत्यन्त सरल तथा सुस्पष्ट है। चित्रधारा के वर्गीकरण में अधिकतर समविभाजन (फारमल डिवीजन) के आधार पर वर्गीकृत करके आकारों को संयोजित किया गया हैं। यहाँ के चित्रों में क्षितिज रेखा का अभाव सदा दिखाई देता हैं। प्रायः चित्रों में पृष्ठभूमि एक ही रंग की भरकर पूरी कर दी गयी है। राजस्थान के अन्य भित्ति चित्रों में संयोजना–शक्ति सुमधुर कल्पना जन्य व कलात्मकता लिये हुए है। शेखावाटी के भित्ति–चित्रों में खेतड़ी, चिड़ावा तथा अन्य कुछ स्थानों को छोड़कर अन्य स्थानों के चित्रों में प्रायः प्रकृति की सुषमा का अभाव है। खेतड़ी के भित्ति चित्रों में बूँदी तथा जयपुर शैली का व्यापक प्रभाव होने के कारण ही बदली, वन तथा लतिकाओं का अंकन हुआ है। अन्यत्र स्थानों पर पेड़–पौधों को प्रतीक रूप में ही अभिव्यक्त किया गया है जबकि शेखावाटी के अतिरिक्त राजस्थान के अन्य भित्ति चित्रों में रूपहली, सजीलों प्रकृति के दर्शन हो जाते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि शेखावाटी क्षेत्र के भित्ति चित्र जयपुर, जोधपुर तथा कोटा, बूँदी शैली से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हैं।

निष्कर्षतः शेखावाटी क्षेत्र के भित्ति चित्र, राजस्थान के अन्य स्थानीय भित्ति चित्रों की तुलना में कलात्मक दृष्टि से उच्च स्तर के हैं। इन चित्रों में अन्य शैली का प्रभाव होने पर भी इनका अपना एक अलग ढंग एवं परम्परा है। ये लोक कला शैली के अधिक निकट हैं। सीकर के भित्ति चित्रों में परम्परागत और आधुनिकता का सबसे बेहतर मिश्रण मिलता है। यहां रामायण, महाभारत और राधा–कृष्ण के चित्रों के साथ–साथ ब्रिटिश एवं मुगल प्रभाव साफ दिखता है। आपको यहां दीवारों पर रेलगाड़ी, मोटर कार, ग्रामोफोन सुनते हुए लोग, अंग्रेज अफसर, और हवाई जहाज के चित्र भी मिलेंगे। सीकर के भित्ति चित्रों का विकास मुख्यतः सेठ–साहूकारों के संरक्षण में हुआ। जब ये व्यापारी पैसा कमा कर वापस आते थे, तो अपनी हवेलियों और महलों को खूबसूरत चित्रों से सजाते थे ताकि उनकी स्थिति दिखे। जबकि राजस्थान के बाकी क्षेत्रों (मेवाड़, मारवाड़, जयपुर) की चित्र शैलियां सीधे तौर पर राजपूत राजाओं और महराणाओं के संरक्षण में पनपी।

संदर्भ

1 आनन्दी लाल पोद्धार, स्मृति पुष्पी, पृ. 260

2 गुप्ता, मोहनलाल, फ्रेस्को एण्ड वाल पेन्टिंग्स ऑफ राजस्थान, पृ. 4

3 कांग, कंवरजीत, संस्कृति कल्टीवेशन ऑफ द सोशल–एलबम ऑफ वाल पेन्टिंग, होमेज टू जयपुर, पृ. 70

4 गुप्ता, मोहन लाल, फ्रेस्कोज एण्ड वाल पेन्टिंग ऑफ राजस्थान, पू. 5

5 कांग, कंवरजीत, संस्कृति कल्टीवेशन ऑफ द सोशल–एलबम ऑफ वाल पेन्टिंग, होमेज टू जयपुर, पृ. 71

6 वही, पृ. 283

7 निर्मला, राजस्थानी चित्रकला में नारी का अंकन (अ.प्र.शो.), पृ. 76

8 गुप्ता, मोहन लाल, फ्रेस्कोज एण्ड वाल पेंटिंग्स ऑफ राजस्थान, पृ. 7

9 फिलिप राइसन, इण्डियन पेन्टिंग, पृ. 120

10 मोहनलाल गुप्ता, फ्रेस्कोज एण्ड वाल पेन्टिंग्स ऑफ राजस्थान, पृ. 7

11 अग्रवाल, आर.एस. अग्रवाल, मारवाड़ म्यूरल्स, पृ. 29

12 वही, पृ. 57

13 रूप लेखा वॉल्यूम 34 नं. 1,2 एवं पेन्टिंग्स इन बूँदी एम.एस. रंधावा, पृ. 11

14 वही, देखिये चित्र सं. 15

15 गोयट्ज, हरमन, आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर, बीकानेर स्टेट, पृ. 62

16 गुप्ता, मोहनलाल, फ्रेस्कोज एण्ड वाल पेन्टिंग्स ऑफ राजस्थान, पृ. 6.

17 निर्मला, राजस्थानी चित्रकला में नारी अंकन (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ) पृ. 306

18 आनन्दीलाल पोद्दार स्मृति पुष्पी, पृ. 266

19 वही, पृ. 276

20 निर्मला, राजस्थानी शैली में नारी का अंकन (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ), पृ. 300

21 परसरामपुरा की ठाकुर शार्दूलसिंह जी की छतरी जिसका निर्माण काल 1750 ई. के आस–पास हुआ था, विभिन्न भित्ति–चित्रों से सजी हुई है जिनकी शैली बैराठ व आमेर में भारमल की छतरी से काफी प्रभावित है।

22 नौ नारी कुंजर' तथा 'पंच नारी अश्व' की चित्रकृतियाँ बिसाऊ में प्रायः 19वीं शती की हैं